एस एस ए - यू पी | यूनिसेफ - यू पी | सिमेट | इग्नस पहल

पढ़े भारत बढ़े भारत - उत्तर प्रदेश

टेलोस — टार्गेटेड एनहांसमेंट ऑफ़ लर्निंग आउटकम्स थ्रू सपोर्टिव सुपरविजन

कार्यक्षेत्र व्याप्ति

ज़िले: **5**
खंड: **72**
न्याय पंचायत : **743**
पर्यवेक्षक: **1163**
विद्यालय: **8246**
शिक्षक: **35,585**
विद्यार्थी: **9,23,333**

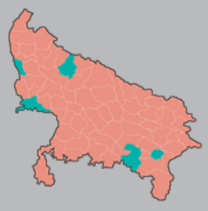

पद्धति

- भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के लर्निंग एनहांसमेंट कार्यक्रम पढ़े भारत बढे भारत स्कीम के अंतर्गत हुए पायलट कार्यक्रम (इसीडीआईएलओ) को आगे बढ़ाना **जिससे राज्य को गुणवत्ता सुधार के लक्ष्य के लिये सहायता मिले**
- **अनेक स्तरों पर परिणाम देखने के लिए केंद्रित दिशानिर्देशक।** ध्यान शिक्षकों व उन्हें सहयोग देने वालों की आवश्यकताओं पर दिया जायेगा जिस से बच्चों में वांछित परिणाम देखने को मिलें
- **मापे जाने योग्य संकेतकों द्वारा :**
  - विद्यार्थियों में ऊच्च स्तर के सीखने के परिणाम मापे जा सकें
  - शिक्षकों के शैक्षिक व प्रबंधन के प्रदर्शन को माप सकें
  - डीआरटी, बीआरटी व एनपीआरसी के शैक्षिक व पर्यवेक्षी नेतृत्व प्रदर्शन को मापा जा सके
- **प्रभावकारिता पर ज़ोर:** योजना व निगरानी लगातार बनाये रखना जिस से सीखने के स्तर में साबित सुधार सुनिश्चित हो तथा क्षमतावर्धन व बेहतर प्रदर्शन के मौकों के द्वारा सहयोगात्मक पर्यवेक्षण

रोलआउट

- राज्य स्तर पर डीआरटी के साथ **3 कार्यशालाएँ**, बीआरटी, शिक्षकों व एनपीआरसी के साथ खंड स्तर पर **3 कार्यशालाएँ**
- आवश्यकता के आधार पर यूनिसेफ व इग्नस द्वारा मौके पर व ऑनलाइन सहायता
- लगातार सहयोगात्मक निगरानी करते हुए प्रदर्शन का बेसलाइन व एन्डलाइन मूल्यांकन

प्रोजेक्ट परिप्रेक्ष्य

उद्देश्य

१. कक्षा 3 व 5 के विद्यार्थी हिंदी व गणित में विशिष्ट उच्च स्तरीय सीखने के परिणामों में 3% की बेहतरी दिखाएँगे
२. प्रोजेक्ट के दायरे में कम से कम 25% एनपीआरसी व एबीआरसी सहायक पर्यवेक्षण के संकेतकों में स्तर 1 से स्तर 3 को पहुँचेंगे। यह संकेतक लक्षित शिक्षक प्रदर्शन के संकेतक व विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों को ध्यान में रख के बनाए गए हैं।

आउटपुट

- पूरे तंत्र की सहमति से बहुस्तरीय परिणाम
- शिक्षकों, प्रशिक्षकों व पर्यवेक्षकों के लिए मार्गदर्शक दस्तावेज़ विकसित
- ऐसे संकेतक बनाये गए जो मापे जा सकें
- परिणाम प्रवृत्त सहयोगात्मक पर्यवेक्षण की डाटा आधारित योजना तैयार
- विद्यार्थियों, शिक्षकों, एनपीआरसी, बीआरटी, डीआरटी प्रदर्शन के बेस लाइन व एन्ड लाइन का विश्लेषण
- ज़िले व खंड स्तर पर लक्षित पाक्षिक योजना का विकास व कार्यान्वयन
- मोबाइल फ़ोन द्वारा लगभग रियल टाइम निगरानी जिस से डाटा आधारित अनुकूल पर्यवेक्षण किया जा सका

उल्लेखनीय बिंदु

परंपरागत वर्गीकरण से सहयोगात्मक नेतृत्व तक का सफ़र

- बीईओ शैक्षिक स्तरीयता सुनिश्चित करने के लिए पाठ योजना देकर व सहायक पर्यवेक्षण के लिए पहल कर रहे हैं
- बीआरसी व सीआरसी शैक्षिक व पर्यवेक्षी सहायता दे रहे हैं
- व्हाट्सएप्प ग्रुपों में शैक्षिक मुद्दों पर शिक्षक, पर्यवेक्षक व प्रशासक खुल कर चर्चा कर रहे हैं

पूछिए -जानिये -प्रेरक बनिए

- पूरे तंत्र ने वर्णनात्मक संकेतकों को अपना लिया है व उन्हें लक्ष्य निर्धारण व प्रदर्शन की प्रभावशीलता की समीक्षा के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है
- कार्यशालाओं में विकसित लक्षित कार्ययोजनाएँ अब ज़मीन पर कार्यान्वित हो रही हैं। प्रतिभागी अब इनकी माँग अन्य कार्यशालाओं में भी करने लगे हैं

कार्यक्रम डिज़ाइन के सिद्धांत

- कार्यक्रम को अपनाने की पहल ज़मीन से आये
- कार्यक्रम मौजूदा राज्य तंत्र में सम्मिलित हो जाये व राज्य की क्षमताओं में बढ़ोत्तरी करे
- रचनात्मक व विद्यार्थी केंद्रित शैक्षणिक पद्धति
- सूक्ष्म स्तर की योजना व प्रदर्शन की नियमित निगरानी
- ढाँचा निर्माण के सिद्धांत पर शिक्षण, प्रशिक्षण व निगरानी के तरीके के लिए सहयोग
- किसी बात को वास्तव में अपनाये जाने के लिए दस्तावेज़ देने के बनिस्पत स्वयं उत्पन्न किये ढाँचे
- नन्हे कदमों से बड़े बदलाव

परिवर्तन के सिद्धांत

इस प्रोजेक्ट का डिज़ाइन विस्तृत शोध व ज़मीनी स्तर पर कार्यान्वयन में **व्यवहार मनोविज्ञान के सिद्धांत** (शिक्षकों व पर्यवेक्षकों का अभिप्रेरण), **ज्ञान विज्ञान** (शैक्षणिक तरीके) व **वयस्कों के सीखने की पद्धति** को जान समझ कर बनाया गया है। इसलिए इसकी पद्धति व्यावहारिक है तथा इससे टिकाऊ बदलाव अपनाया जाना सुनिश्चित होगा।

यह सुनिश्चित करने को कि कार्यक्रम (शिक्षकों द्वारा बेहतर प्रदर्शन व सहयोगात्मक पर्यवेक्षण) से वांछित परिणाम (विद्यार्थियों में हिंदी व गणित में उच्च स्तरीय सीखने के परिणामों में बेहतरी) मिलें इसके लिए इसे **हितधारकों के सहयोग से बनाया** गया है।

योजना के तरीकों पर निरंतर निगरानी रखी जाती है जिस से पहले से सावधानी बरती जा सके। वांछित परिणामों के लिए **सन्दर्भ व स्तर के अनुरूप इनपुट** दिए जाते हैं। यह हिंदी व गणित के लिए गतिविधियाँ, पाठ योजना बनाने के लिए सुझाव, शिक्षकों के लिए प्रश्न बनाना व कक्षा अवलोकन, पर्यवेक्षकों के लिए बैठक की कार्यसूची जैसे सहायक कार्य हैं

बीआरसी व एनपीआरसी के नेतृत्व में मासिक बैठकें व ऑनलाइन आदान प्रदान व एक राज्य स्तरीय हेल्पलाइन के ज़रिये ज़मीनी स्तर के प्रश्नों का हल पूरे तंत्र को प्रभावकारी रूप से सक्षम बनाता है।

इस प्रोजेक्ट की सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि विद्यार्थियों में सीखने के उच्च स्तरीय परिणाम व शिक्षकों व पर्यवेक्षकों के प्रदर्शन का लक्ष्य - हर स्तर पर कितने प्रतिशत की बेहतरी हो -यह पहले से ही तय है। **इसका मतलब यह हुआ कि आउटपुट निश्चित है।** इसके बाद शैक्षणिक प्रक्रियाओं के लिए, पर्यवेक्षण के काम व प्रशिक्षण की पद्धतियों के लक्ष्य पाने के लिए जो लगातार व आवश्यकता आधारित **इनपुट** चाहियें वह लचीले माध्यमों से दिए जाते हैं। वह **ज़रूरतों व सन्दर्भ के अनुरूप** होते हैं। इस प्रकार लक्षित परिणामों के लिए योजना बनाना निगरानी करना व इनपुट में फेर बदल करना- **काम करने का एक नया तरीका है।** इस से पूरे शैक्षिक तंत्र के हर स्तर पर व्यावसायिक क्षमता व समन्वित प्रदर्शन बेहतर हो सकेगा।

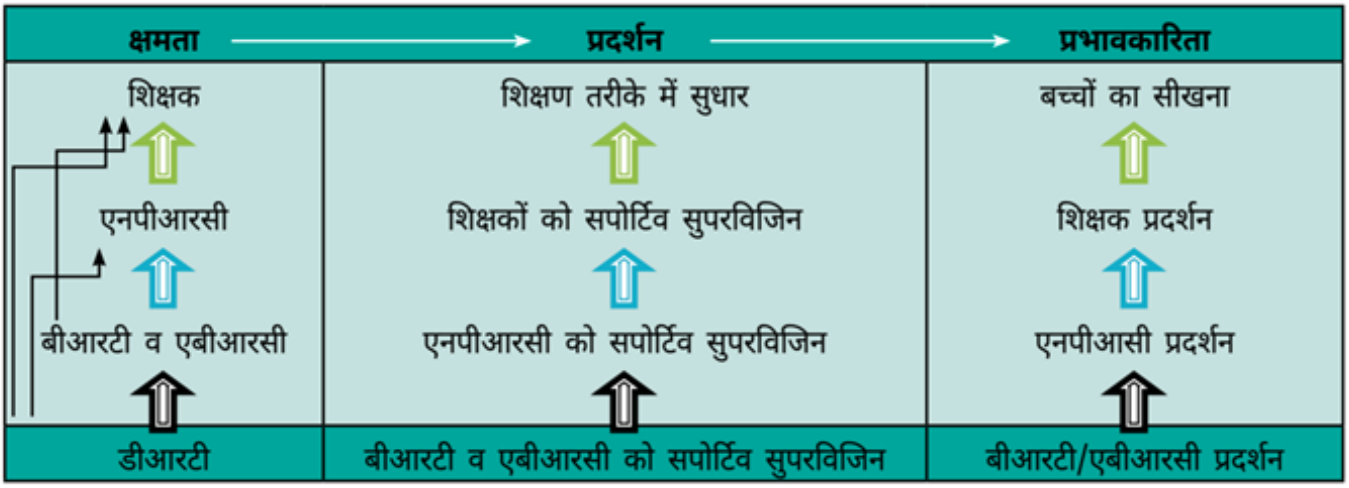

इग्नस पहल
128 बी, प्रथम तल, शाहपुर जट, नयी दिल्ली 110049
संपर्क: +91 9910307993
ignuspahal@gmail.com | www.ignus-erg.org

IGNUS PAHAL